

## पजामा ख़राब होने से बच गया-2

“लेखक : विवेक सम्पादन : तृष्णा ऐसा मनमोहक  
दृश्य को देख कर आनन्द के मारे में मेरा लिंग बार बार  
सिर उठा कर उनकी योनि को सलामी देने लगा था,...

[Continue Reading] ...”

Story By: Vivek Oberoi (viveko010194)

Posted: Wednesday, June 11th, 2014

Categories: [चाची की चुदाई](#)

Online version: [पजामा ख़राब होने से बच गया-2](#)

## पजामा ख़राब होने से बच गया-2

लेखक : विवेक

सम्पादन : तृष्णा

ऐसा मनमोहक दृश्य को देख कर आनन्द के मारे में मेरा लिंग बार बार सिर उठा कर उनकी योनि को सलामी देने लगा था, मेरे मन में उस डबल रोटी की तरह सुन्दर सी दिखने वाली योनि को देख कर उसे छूने की लालसा जाग उठी थी।

अपनी लालसा की तृप्ति के लिए मैंने चाची से पूछा लिया कि अगर वे अनुमति दें तो मैं उनकी जाँघों का मर्दन भी कर दूँ।

चाची कुछ देर के लिए चुप रही और फिर बोली- ठीक है, तुम मेरी दोनों टांगों की तेल से मालिश कर दो मलहम से नहीं !

तब मैंने चाची से कहा कि वे पैटी पहन लें क्योंकि नाइटी ऊपर होने के कारण अगर कोई उन्हें इस हालात में देख लेगा तो अच्छा नहीं लगेगा !

मेरी बात सुन कर चाची ने झट से नाइटी नीचे की और उठ कर खड़ी हो गई तथा मुझे अपने साथ उनके शयनकक्ष में चलने को कहा। मैंने महलम की डिब्बी बंद की और उनके पीछे पीछे उनके शयनकक्ष की ओर चल पड़ा !

कमरे में पहुँच कर देखा कि वह खाली था और जब मैंने चाचा के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि वे दोपहर को किसी काम से तीन-चार दिनों के लिए शहर चले गए थे।

इसके बाद चाची ने शयनकक्ष के दरवाज़े को सटकनी लगा कर बैड पर लेट गई और नाइटी को कमर तक ऊंचा कर मुझे टांगों की मालिश करने के लिए कहा।

मैंने उनकी टाँगें चौड़ी करके उनके बीच में बैठ गया और उनकी टांगों पर तेल लगा कर ऊपर से नीचे की ओर अपनी हथेलियों से हल्का-हल्का मर्दन करने लगा !

जब भी मैं उनकी जाँघों का मर्दन करता तब अपने हाथ से उनकी योनि को ज़रूर छू लेता ! मेरा ऐसा करने से जब चाची की ओर से कोई आपत्ति या प्रतिक्रिया नहीं हुई तब मेरा

साहस बढ़ गया, मैं कई बार उनकी जाँघों के अन्दर की तरफ से मर्दन करते समय उनके भगांकुर को अपनी ऊँगली या अंगूठे से रगड़ देता था !  
मेरे ऐसा करने पर कई बार चाची सिहर जाती और उनके शरीर में एक कंपकंपी सी हो उठती तथा वे अपनी टाँगें सिकोड़ लेती !

आधे घंटे के बाद मर्दन क्रिया के अंत में मैंने अपनी लालसा की तृप्ति के लिए दो बार उनकी योनि में अपनी एक ऊँगली भी डाल दी लेकिन ऐसा दिखाया कि वह क्रिया गलती से हो गई थी ।

जब ऊँगली बाहर निकाली तो उसे गीला पाया तब मैं समझ गया की कम से कम एक बार तो चाची का पानी निकल ही गया होगा !

जब मैंने मर्दन समाप्त किया तब मेरा लिंग अब एक नाग की तरह फुफकार रहा था !

मैंने बहुत ही मुश्किल से अपने लिंग को अपनी टाँगों के बीच में दबा कर उठा और

शौचालय में जा कर मूत्र विसर्जन किया तथा चाची का नाम ले कर हस्त-मैथुन किया !

रात के बारह बजे चुके थे और मुझे नींद भी आ रही थी इसलिए मैं चाची को उनके कमरे में ही छोड़ कर हाल कमरे में अपने बिस्तर पर आ कर लेट गया । मेरे लौटने के कुछ देर बाद चाची भी उठ हाल कमरे में आ गई और मेरे साथ ही मेरी ओर पीठ कर के सो गई ।

सुबह चार बजे रोज़ की तरह जब चाची उठ कर बाहर जाने लगी तब मेरी भी नींद खुल गई ।

मैंने करवट बदल कर सोने का प्रयास किया लेकिन रात का दृश्य मेरी आँखों के सामने घूमने लगा और मेरा मन कुछ विचलित हो गया ।

यह देखने के लिए कि चाची इतने सुबह क्या करती है मैं उठ कर चाची के पीछे बाहर की ओर चला गया ।

मैंने कमरे के दरवाज़े की ओट में खड़े हो कर देखा कि चाची शौचालय से निकल कर स्नानगृह में घुस गई थी ।

मैं अभी सोच रहा था कि आगे क्या करूँ, तभी मैंने देखा कि चाची ने बिल्कुल निर्वस्त्र

आँगन में तुलसी के पौधे के पास जाकर झुक कर माथा टेका और फिर इधर उधर देखती हुई वापिस स्नानगृह में चली गई।

यह दृश्य देख कर मेरी उत्तेजना और जिज्ञासा बहुत बढ़ गई थी इसलिए मैं दरवाज़े की ओट से निकल कर स्नानगृह के दरवाज़े के पास पहुँच गया।

स्नानगृह पहुँचने पर मैंने पाया कि दरवाज़ा खुला था और चाची अन्दर बैठी स्नान कर रही थी।

स्नानगृह की मध्यम रोशनी में भी चाची का गोरा बदन चमक रहा था और वे एक संगमरमर की मूरत लग रही थी! मैं दरवाज़े की ओट में छिपा हुआ अपने लिंग को हाथ से हिलाते हुए उस नज़ारे को देखने में मस्त था तभी चाची ने स्नान समाप्त करके खड़ी हो गई।

चाची के बड़े बड़े गोल स्तन और उन पर उभरी हुई गहरे भूरे रंग के चुचूक बहुत ही आकर्षक लग रहे थे जिन्हें देख कर मेरे मन में उन्हें चूसने की लालसा होने लगी थी।

चाची के पूर्ण निर्वस्त्र शरीर को देख कर मेरी उत्तेजना चरम सीमा पर पहुँच गई और मेरे लिंग में से वीर्य की धारें मेरे पजामे में ही निकल गई।

इससे पहले चाची मुझे इस हालात में देखे, मैंने तुरंत वहाँ से भाग कर शौचालय में जाकर अपनी अधूरी क्रिया को पूरा किया और लिंग और पजामे को धोकर वापिस कमरे में आ गया।

कमरे में पहुँच कर मैंने दूसरा पजामा निकाल कर पहन रहा था तभी चाची अन्दर आ गई। मुझे अर्धनग्न हालत में देख कर चाची ने पूछा लिया कि मुझे क्या हुआ जो इस समय पजामा बदल रहा हूँ?

मैं उनके प्रश्न से घबरा गया और मेरे मुँह से निकल गया कि कुछ नहीं, थोड़ा गन्दा हो गया था, इसलिए बदल रहा हूँ !

चाची ने मुस्कराते हुए मेरी ओर देखा और फिर कमरे से बाहर निकल गई !

चाची के जाते ही मेरी साँस में साँस आई और मैं तुरंत पजामा बाँध कर अपने बिस्तर में सो गया।

सुबह जब मैं नाश्ता कर के मेज़ से उठ रहा था तब चाची ने पूछा कि क्या मेरा पजामा रोज़ खराब होता है ?

तब मैंने उत्तर में सिर्फ नहीं कह दिया ।

चाची मुस्कराते हुए धीरे से बोली- तुम स्नानगृह के बाहर से खड़े होकर नज़ारा देखते रहोगे तो पजामा तो खराब होना ही था ! अगर तुम स्नानगृह के अन्दर आ जाते तो मैं ऐसा कभी नहीं होने देती और तुम वह क्रिया भी बहुत अच्छे से कर लेते !

उनकी यह बात सुन कर मैं स्तब्ध रह गया और समझ गया कि चाची को मेरे ओट में खड़े हो कर उन्हें देखने के बारे में सब बत ज्ञात थी ।

मैं आगे कोई भी बात किये बिना ही वहाँ से उठ कर अपने कमरे चला गया और पूरे दिन चाची के सामने आने से बचता रहा ।

दोपहर को सोते हुए जब मैंने करवट बदली तो चाची से टकरा गया और मेरी नींद खुल गई तथा मैंने चाची को अपने पास लेटे हुए देखा ।

मैं जल्दी से उठ कर वहाँ से जाने ही लगा तभी उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे जाने से रोक लिया और पूछा कि मैं उनकी टांगों की मालिश कब करूँगा ।

मैंने बोल दिया कि जब आप कहोगी, तब कर दूँगा !

तब उन्होंने कहा कि पिछली रात की तरह सोने से पहले ज़रूर कर देना !

मैंने उत्तर में अच्छा कहा और वहाँ से चला गया ।

रात के दस बजे सब सो रहे थे लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी क्योंकि चाची अभी तक मेरे पास सोने के लिए नहीं आई थी ।

कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद मुझे विचार आया कि हो सकता है कि चाची अपने शयनकक्ष में मेरी प्रतीक्षा कर रही हो !

मैं तुरंत उठ कर चाची के शयनकक्ष में गया तो उन्हें बिस्तर पर लेटे हुए पाया !

मुझे देख कर वे मुस्कराई और पूछा कि मैं इतनी देर से क्यों आया हूँ तो मैंने बता दिया कि मैं उनकी प्रतीक्षा हॉल कमरे में कर रहा था ।

तब उन्होंने मुझे शयनकक्ष के दरवाजे को सिटकनी लगाने को कहा और अपनी नाइटी को कमर ता उठा कर टाँगें फैला दीं।

मैं तुरंत दरवाजे में सिटकनी लगा कर शृंगार-पटल से तेल की शीशी लेकर उनकी टाँगों के बीच में बैठ गया और पिछली रात की तरह उनकी टाँगों तथा जाँघों का मर्दन करने लगा तथा मौका लगते ही उनकी योनि और भगांकुर छू अथवा रगड़ देता !

शायद चाची को भी मेरा ऐसा करने से आनन्द आने लगा था क्योंकि उस दिन उनके शरीर में कंपकंपी होने के बावजूद भी उन्होंने अपनी टाँगें नहीं सिकोड़ी। मर्दन समाप्त करने से पहले जब भी मुझे मिला मैंने उनकी योनि में अपनी दो उँगलियाँ डाल कर अच्छी तरह से अन्दर बाहर भी कर दी।

चाची ने अह्ह... अह्ह... और उहंहंह... उहंहंह... कर के योनि-रस का स्खलन कर दिया जिससे उनके बिस्तर की चादर भी गीली हो गई !

मैंने पिछली रात की तरह उठ कर शौचालय में जा कर मूत्र विसर्जन किया तथा चाची का नाम ले कर हस्तमैथुन कर रहा था तब चाची भी शौचालय के अन्दर आ गई और मेरे लिंग को अपने हाथ में लेकर मेरा हस्तमैथुन करने लगी।

चाची का हाथ लगने से मेरी उत्तेजना चरमसीमा तक पहुँच गई और दो मिनट में ही मेरा वीर्य स्खलन उनके हाथ में ही हो गया। उन्होंने मेरे वीर्य से सराबोर अपने हाथ को अपने मुँह से लगा कर उस वीर्य को पहले तो चखा और फिर उनके हाथ में लगे सारे रस को चाट लिया।

मैं जब अपने लिंग को धोकर शौचालय से बाहर निकलने लगा तो चाची ने कहा- अभी यहीं रुकना, थोड़ी देर इसी कमरे में लेटेंगे और हाल कमरे में बाद में चलेंगे !

उनका कहना मान कर वहीं रुक गया और चाची को मूत्र विसर्जन और योनि साफ़ करते हुए देखता रहा। फिर चाची मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने साथ अपने बैड तक लेकर गई और मुझे अपने साथ चिपका कर लिटा लिया !

चाची मेरी ओर करवट करके लेटी थी और मैंने चाची की ओर करवट कर रखी थी। चाची

थोड़ी थोड़ी देर बाद मुझे खींच कर अपने साथ चिपका लेती और मेरे गाल और होंठों को चूम लेती ।

जब चाची मुझे चूमती तब मैं भी उनका साथ देता और उनके गाल और होंठों को चूम लेता !

चाची के इस व्यवहार से मुझ में पता नहीं कहाँ से इतनी हिम्मत आ गई कि मैं नाइटी के ऊपर से ही उनके उभारों को मसलने लगा ! पहले तो मैं धीरे धीरे कर रहा था लेकिन जब चाची ने कोई विरोध नहीं किया तो मेरी हिम्मत और भी बढ़ गई और मैंने उनकी नाइटी के अन्दर हाथ डाल कर उनके उरोजों तथा चुचूकों को जोर जोर से मसलने लगा ।

पन्द्रह से बीस मिनट तक ऐसा करते रहने से मेरा लिंग कुतुब मीनार की तरह खड़ा हो गया, मुझे ऐसा लगने लगा जैसे कोई रूह मेरे उपर आ गई हो !

फिर मैंने अपना हाथ नीचे ले जा कर उनकी योनि के मखमली बालों को सहलाया तथा उनकी योनि के होंठों को स्पर्श किया ।

तभी अचानक चाची सीधी होकर लेट गई और अपनी टांगें चौड़ी करते हुए अपनी योनि के पास मेरे हाथ के लिए जगह बना दी ।

मेरा काम आसान हो गया, मैं अपनी बीच वाली ऊँगली उनकी योनि के छेद में डाल कर अन्दर बाहर करने लगा !

साथ में मैं अपने अंगूठे से उनके भगांकुर को भी रगड़ने लगा जिस के कारण चाची उत्तेजित हो अह्ह... अह्ह... उहंहं... उहंहं... की सिसकारियाँ लेने लगी ।

मैं लगभग पांच मिनट तक चाची की योनि के साथ ऐसे ही करता रहा तथा दूसरे हाथ से उनके उरोज और चुचूक मसलता रहा ।

तभी चाची ने जोर से उहंहंहंहंहंहंहंहं..... की सिसकारी ली और दोनों टांगों को सिकोड़ लिया जिससे मेरा हाथ उसमें फंस गया ।

फिर चाची का बदन अकड़ गया और उनकी योनि में से योनि-रस का प्रवाह निकला पड़ा जिससे मेरा पूरा हाथ गीला हो गया ।

मैंने जोर लगा कर जैसे ही अपना हाथ चाची की जाँघों के बीच में से बाहर खींचा तभी चाची ने उसे पकड़ कर मेरे मुँह से लगा दिया और मुझे उस रस को चाटने का संकेत दिया ! मैंने चाची का कहा मानते हुए जब उस रस को चाटा तो वह मुझे बुआ के योनि-रस से ज्यादा मीठा और स्वादिष्ट लगा ।

मैंने तुरंत हाथ पर लगे सारे रस की चाट लिया और फिर प्यासी आँखों से चाची की ओर देखा और आँखों के इशारे से योनि से निकल रहे रस को पीने की इच्छा ज़ाहिर की ।

चाची ने अपनी दोनों टाँगें चौड़ी कर के मुझे स्वीकृति दी और मेरे सिर को पकड़ कर मेरे मुँह को अपनी योनि के ऊपर दबा दिया ।

मैंने तुरंत अपनी जीह्वा चलानी शुरू की और अधिक से अधिक रस को चाट कर चाची की योनि को बिल्कुल साफ़ कर दिया !

इसके बाद अचानक चाची उठ कर बैठ गई और मुझे धक्का दे कर बिस्तर पर लिटा दिया । फिर उन्होंने मेरे पजामे का नाड़ा खोल कर मेरे खड़े लिंग को बाहर निकाल कर उसे अपने मुख में डाल कर चूसने लगी ।

चाची ने मेरे लिंग को चूसते चूसते पूरा का पूरा अपने मुँह में ले कर उसे अपने गले के अन्दर तक उतार लिया, फिर उन्होंने धीरे धीरे उसे अन्दर बाहर करना शुरू किया और दो मिनट में ही मेरे वीर्य रस की पिचकारी उनके मुँह में ही चल गई और उन्होंने भी मेरा सारा रस पी लिया ।

क्योंकि हम पर नींद हावी होने लगी थी इसलिए दोनों हाल कमरे में जा कर डबल बैड वाले बिस्तर पर एक दूसरे की तरफ पीठ कर के सो गए ।

सुबह चार बजे जब चाची जागी और उठ कर शौचालय की ओर चली गई तब मैं भी उठा और उनके पीछे पीछे उसी शौचालय की ओर चला गया ।

वहाँ मैंने चाची को कमोड पर बैठे शौच करते हुए देखा तो मैं दरवाज़े के बाहर खड़ा हो कर उनके बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा । पांच मिनट के बाद चाची ने जब शौच से निवृत्त हो कर बाहर निकली तो मुझे खड़ा देख कर थोड़ा विस्मित हुई लेकिन तुरंत



स्नानगृह में चली गई।

मैंने शौचालय में जाकर मूत्र विसर्जन किया और बाहर निकला तो चाची ने आवाज़ दे कर मुझे स्नानगृह के अन्दर बुला लिया।

स्नानगृह के अंदर चाची बिल्कुल नंगी खड़ी थी तथा मेरे अंदर जाते ही उन्होंने दरवाज़ा बंद कर दिया और मुझे कपड़े उतारने के लिए कहा।

मैंने जब सारे कपड़े उतार दिए, तब चाची ने मेरे खड़े लिंग को देख कर मुस्कराते हुए अपना हाथ आगे बढ़ा कर मेरे लिंग को पकड़ लिया और उसे अपने मुँह में लेकर चूसने लगी।

जब वे मेरा लिंग चूस रही थी तब उन्होंने मेरे हाथों को अपने उरोजों पर रख दिया और उन्हें मसलने का संकेत किया।

मैं तुरंत उनके दोनों उरोजों और चुचूकों को मसलने लगा जिससे चाची उत्तेजित होने गई और दबे स्वर में सिसकारी लेने लगी।

कुछ देर के बाद ही चाची मेरे लिंग को अपने मुख से निकाल कर खड़ी हो गई और मुझ से चिपक गई। उन्होंने मेरे खड़े लिंग को अपनी दोनों जाँघों के बीच में जोर से दबा लिया और आगे पीछे हिलने लगी।

मेरे लिंग पर जाँघों से लग रही रगड़ और चाची के उरोजों का मेरी छाती से टकराने के कारण मेरी उत्तेजना में अत्याधिक वृद्धि हो गई! इससे पहले कि मैं अपने आप को सम्भाल पाता तब तक मेरे लिंग में से रस की फुहार छूटी और चाची की जाँघों के बीच में से होती हुई उनके पीछे पड़ी हुई पानी से भरी बाल्टी में जा गिरी।

इसके बाद चाची मुझसे अलग हुई और नीचे बैठ कर मेरे लिंग को अच्छी तरह से धो कर साफ़ किया और कहा- लो आज तुम्हारा पजामा खराब होने से बचा दिया !

मैं उनके कहने का अर्थ समझ गया और चुपचाप अपने कपड़े पहन कर स्नानगृह से बाहर निकल कर अपने बिस्तर पर जाकर सो गया !

सुबह आठ बजे छोटी चाची ने मुझे जगाया और मेरे हाथ में फ़ोन पकड़ा दिया।

जब मैंने फोन पर बात की तो दूसरी तरफ से पापा की आवाज़ सुनाई दी।

वे कह रहे थे कि मेरी इंजीनियरिंग की प्रतिस्पर्धा परीक्षा की तिथि आ गई है और दो सप्ताह के बाद है इसलिए उसकी तैयारी के लिए मैं तुरंत शहर वापिस आ जाऊँ ! मैंने उनको 'अच्छा, शाम तक पहुँच जाऊँगा' कह कर फ़ोन रख दिया और बुझे मन से उठ कर वापिसी की तैयारी में जुट गया ।

दोपहर का खाना खाने के बाद जब मैं बड़ी चाची से मिलने गया तो उन्होंने मुझे गले से लगाया और अपने बदन को मेरे बदन से चिपका लिया ।

उनकी इस भावना को महसूस कर मेरी आँखों से अश्रु आ गए तब चाची मेरे चक्षुओं को चूम कर मेरे अश्रुओं को पी गई तथा मेरे गालों को चूमते हुए धीरे से मेरे कान में कहा- शहर में पजामा खराब मत होने देना !

सबसे विदा लेकर मैं बड़ी चाची की ओर देखता हुआ उनके साथ संसर्ग की अतृप्त लालसा एवं तृष्णा को अपने साथ लिए छोटे चाचा के साथ शहर की ओर चल पड़ा ।

मोटर साइकिल के पीछे बैठे कर जब मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो मुझे महसूस हुआ कि जैसे बड़ी चाची की आँखें कह रही हो कि 'अगली बार जब मेरे पास आओगे तो तुम्हारी हर मनोकामना ज़रूर पूरी कर दूंगी !

प्रिय मित्रो, कृपया बताइए कि आप सब को मेरे जीवन में घटित इस घटना का विवरण पढ़ कर कैसा लगा ?

अन्त में मैं अपनी पूजनीया गुरु श्रीमती तृष्णा जी के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहूँगा, जिन्होंने मेरी इस रचना को सम्पादित किया और उसमे सुधार करके आप सबके लिए अन्तर्वासना पर प्रकाशित करने में मेरी सहायता की !

आप सबसे अनुरोध है कि आपके दिल जो भी सच्ची प्रतिक्रिया है उसे लिख कर हमें ज़रूर भेजें !

मेरा ई-मेल आई डी है [viveko010194@ gmail.com](mailto:viveko010194@gmail.com)

तथा मेरी गुरुजी का ई-मेल आई डी है [trishnaluthra@mail.com](mailto:trishnaluthra@mail.com)

